ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

के मानविकी संकायान्तर्गत संस्कृत विषयक
पी-एच्०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

प्रस्तावित विषय

"वेदान्तदर्शन का व्यावहारिक पक्ष"

रवीन्द्र नारायण चौरसिया 30/11/24

शोध-निर्देशक

(डॉ. आर.एन. चैरसिया)

सह प्राध्यापक
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सविता आनन्द 30.11.24

शोधार्थी

(सविता आनंद)

विभागीय क्रमांक– 07
पैट क्रमांक– 22180047
पैट– 2021–22

1. **शोध शीर्षक (Title of Research) –**

"वेदान्तदर्शन का व्यावहारिक पक्ष"

2. **भूमिका (Introduction) –**

वेदांतदर्शन या उत्तर मीमांसा प्राचीन हिंदू ग्रंथों, जिन्हें वेद कहा जाता है, में निहित है, जिसकी स्थापना आदि शंकराचार्य ने की थी और यह उपनिषदों में विस्तृत जीवन-दर्शन को कायम रखता है। वेदांतदर्शन के अनुसार ब्रह्म परम वास्तविकता है, जिसका कोई दूसरा भाग नहीं है जो स्थान और समय, नाम और रूप से परे है, जिसका आरंभ या अंत नहीं है। वेदान्त का शाब्दिक अर्थ है, वेदों के अन्त में। अर्थात् जिसकी रचना वैदिककाल के अंत में हुई हो। दर्शन का शाब्दिक अर्थ है **"दृष्यते अनेन इति दर्शनम्"**। अर्थात् 'विशेष ज्ञान' जो मनुष्य के जीवन में ज्ञान, प्रेम, सत्य और तत्व, अस्तित्व, जगत् भविमय का पूर्ण ज्ञान कराता है।

वेद-वेदान्त ही हमारे जीवन के आधार हैं। इन्हीं के ज्ञान के द्वारा मनुष्य के विचारों का विकास और विश्वकल्याण एवं अभ्युदय संभव है। उपनिषद् 'वेद' के अन्त में आते हैं। वेद के अन्दर प्रथमत: वैदिक संहिताएँ- ऋक्, यजु:, साम तथा अथर्व आते हैं। इस साहित्य के अन्त में होने के कारण उपनिषद् वेदान्त कहे जाते हैं। वेदान्तदर्शन के रचनाकार महर्षि वादरायण व्यास जी ब्रह्म-सूत्र की रचना की, जिसे वेदान्त सूत्र, शारीरिक सूत्र, शारीरिक मीमांसा या उत्तरमीमांसा भी कहा जाता है। वेदान्त की परिभाषा के अनुसार "विश्व" शब्द का अर्थ होता है "व्यष्टि" स्थूल शरीर, अभिमान, क्योंकि जागृत अवस्था में हमको नाम और अप के आधार पर जगत् जो कुछ जान पड़ता है, उसका कारण अपनी स्थूल देह का अभिमान अथवा जानकारी ही होती है।

जो लोग इस विश्व में रहनेवाले सब नाम अप वाले प्राणियों और पदार्थों का हित चाहते हैं, वे ही विश्व हितैषी हैं। अनेक लोग तो विश्वहित का नाम सुनकर ही डर जाते हैं। अज्ञानता के कारण वे

सविता आनन्द
30.11.24

इस प्रकार विचार करने लगते हैं कि हाय, हाय! हमने अपने और अपनी स्त्री, पुत्र, परिवार की सुख-शांति के लिए बड़े परिश्रम से जो धन-संपत्ति, विद्या, बुद्धि अथवा पुण्य आदि प्राप्त किया है, उसे दूसरों के लिए क्यों खर्च करें? अगर दे डालेंगे तो फिर अपने लिए क्या करेंगे? क्या दूसरा आदमी हमारा हित साधन करेगा?

इस प्रकार अधिकांश लोग "विश्व" का अर्थ न समझकर केवल माता-पिता के रज-वीर्य से उत्पन्न इस स्थूल देह को ही आत्मा मानकर, इससे संबंध रखने वाले स्त्री, पुत्रादि को ही अपना मानते हैं और इस भ्रम में पड़कर अनेक मूर्खतापूर्ण कार्य करते रहते हैं।

इस प्रकार परिणाम यह निकलता है कि वे स्वयं भी दुःखी होते हैं और जिन स्त्री, पुत्रों के लिए आत्मानंद का त्याग करते हैं, उन स्त्री, पुत्रादि को भी दुःखी बनाते हैं।

विचार पूर्वक देखा जाय तो अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में जो कुछ स्थूल, सूक्ष्म, कारण देहधारी चैतन्य प्राणी हैं, वे सब अपने-अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए परस्पर सापेक्ष होते हैं। अर्थात् तुच्छ से तुच्छ जीव से लेकर ईश्वर सदृष्य शक्ति धारण करनेवाले प्राणी को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए (सुख-शांति से जीवित रहने के लिए) एक-दूसरे की सहानुभूति की अनिवार्य रूप से आवश्यकता रहती है। इसी भाव को प्रकट करने के लिए भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है-

सहयज्ञः प्रजा सृष्टवा पुरोवाचा प्रजापतिः।

अनेन प्रसविष्य ध्वमेव वो डस्त्विष्ट कामधुक।।

अर्थात् "प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि के आरम्भकाल में यज्ञ सहित प्रजा वर्ग की उत्पति करके इस प्रकार कहा था कि तुम यज्ञ द्वारा अभिवृद्धि प्राप्त करो और वह यज्ञ ही तुम्हारी कामनाओं की पूर्ति के निमित कामधेनु बनें।" "यज्ञ" का अर्थ होता है देव-पूजा, दान और संगतिकरण (संगठन)। "देव-पूजा" का अर्थ होता है- दिव्य आचरण वाले मनुष्यों का मान-आदर सहित अनुकरण करना। यह नहीं कि उनके प्रतीक स्वरूप धातु, पाषाण आदि की 'मूर्ति' को ब्राह्याडम्बर सहित पूजा कर संतोष कर लेना।

सविता आनन्द
30·11·24

"दान" का अर्थ होता है- "यथायोग्य वितरण"। अर्थात् जो व्यक्ति अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा प्रचुर अर्थ संग्रह करने में समर्थ हैं, वे उनके द्वारा अन्य बुद्धि-विद्याहीन परायजनों की सहायता करें, जिससे वे भी शक्ति के अनुसार स्वावलंबी बन सके। दान का अर्थ यह नहीं कि छल, कपट, प्रपंच द्वारा गरीब लोगों का खून चूस-चूस कर अपार धन-सम्पति इकट्ठी करना, उसके द्वारा खूब विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करना और उसमें से जूठन (उच्छिष्ट) की तरह थोड़ी-सी सम्पत्ति देश, जाति के नाम पर खर्च करके "दानवीर" की उपाधि ग्रहण कर लेना।

इस प्रकार "देव-पूजा" और "दान" के लिए शुद्ध हार्दिक भाव की आवश्यकता होती है और अधिकांश मनुष्य चाहे तो उसे कर सकते हैं, पर कार्य "संगतिकरण" अर्थात् एक से विचार रखनेवाले व्यक्तियों को एक सूत्र में बाँधकर संगठित करना कठिन काम है, जिसे विशेष विद्या-बुद्धिवाले व्यक्ति ही कर सकते हैं। इसलिए जो लोग विशेष श्रेणी के विद्वान् और बुद्धिमान् होते हैं, वे ही जनता की रूचि और प्रकृति का ध्यान रखकर संगतिकरण (संगठन) के कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यज्ञ के साथ प्रजा की उत्पत्ति और व्यावहारिक जीवन में एक-दूसरे का "सहयोग" अनिवार्य होने से मनुष्य मात्र के लिये देव-पूजा, दान और संगतिकरण रूपी 'यज्ञ' की उपासना परम कर्त्तव्य है। इसका मुख्य लाभ निम्न श्लोक में बतलाया गया है–

देवान भावयतानेन ते देवा भावयन्तुव:।

परस्परं भावयन्त: श्रेय: परमवात्स्यय।।

अर्थात् "इस यज्ञ द्वारा तुम स्थूल देहाभिमानी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ ऐसे मनुष्य-देवताओं की भावना करते रहो। अर्थात् अपनी भावनाओं को निरन्तर चिन्तन द्वारा दिव्य मूर्तिमान् बनाओं। इससे वे सूक्ष्म दैवी भावनाएँ भी तुम्हारी सहायता करती रहेंगी।" इसमें विशेष गूढ़ रहस्य यह है कि सूक्ष्म तथा कारण देहधारी दिव्यात्मा (देव) वायुमंडल में विचरण करते रहने पर भी अगर कोई कार्य कर सकते हैं

सविता आनन्द
30.11.24

तो किसी स्थूल देहधारी व्यक्ति के माध्यम से ही ऐसा कर सकना संभव होता है। इसीलिए यह कहावत प्रसिद्ध है कि "भावे हि विद्यते देवो"। अर्थात् हमारी दिव्य भावनाओं का अवलंबन करके ही देवगण अपने संस्कारों के अनुरूप हमारा संचालन करते हैं।

वेदांतदर्शन के मूल सिद्धांत–

परम सत्य– जिस तरह अलग-अलग नदियाँ अलग-अलग स्रोतों से निकलती हैं, लेकिन अंतत: विशाल महासागर में विलीन हो जाती हैं, उसी तरह व्यक्तियों की विशिष्ट पहचान हो सकती है, लेकिन अंतत: वे जुड़े हुए हैं।

आत्म बोध– वेदांत किसी के सच्चे स्व या आत्मा की प्राप्ति पर जोर देता है, जिसे ब्रह्म के रूप में अंतिम वास्तविकता माना जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "पश्चिम में यदि कोई व्यक्ति ईश्वर में विश्वास नहीं करता है तो उसे नास्तिक माना जाता है, जबकि वेदांत कहता है कि जो व्यक्ति स्वयं पर विश्वास नहीं करता वह नास्तिक है।"

कर्म और पुनर्जन्म– वेदांतदर्शन कर्म के नियम को मान्यता देता है जो बताता है कि प्रत्येक कार्य का परिणाम कर्म के अनुसार होता है। जैसे कोई व्यक्ति जो बोता है, वहीं काटता है।

मोक्ष के मार्ग– वेदांतदर्शन में आध्यात्मिक मोक्ष के विभिन्न मार्गों को चिह्नित करता है, जैसे ज्ञान (Knowledge), भक्ति (Devotion), कर्म (नि:स्वार्थ कर्म) और राज (ध्यान)।

आध्यात्मिक प्रथाओं, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक परंपराओं पर वेदांतदर्शन का प्रभाव–

आध्यात्मिक अभ्यास– अद्वैत वेदांत का अभ्यास, एक गैर-द्वैतवादी दर्शन, साधकों को परम वास्तविकता के साथ, द्वंद्वों को पार करने और परमात्मा का अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सविता आनन्द
30.11.24

सामाजिक संरचना– एक प्रमुख वेदांत विचारक स्वामी विवेकानंद ने जाति-आधारित भेदभाव की धारणा के विरूद्ध बात की थी, समानता और सामाजिक उत्थान को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया था।

सांस्कृतिक परंपराएँ– धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान वैदिक भजनों और मंत्रों का जाप तथा छंदों का पाठ सांस्कृतिक परंपराओं पर वेदांत के प्रभाव को दर्शाता है।

पथों का संश्लेषण– वेदांत के साथ भक्तियोग (भक्ति का मार्ग) के एकीकरण से हिन्दू-परंपराओं में भक्ति-प्रथाओं और देवताओं की पूजा की लोकप्रियता बढ़ी है।

वेदांतदर्शन की विशेषताएँ–

वेदांतदर्शन सिखाता है कि किसी की अभिव्यक्ति ही जीवन का लक्ष्य है। अस्तित्व की एकता को सचेत समझ के माध्यम से कोई व्यक्ति आत्मा की दिव्य प्रकृति को प्राप्त कर सकता है।

वेदांतदर्शन इस बात की पुष्टि करता है कि वेदांत के अभ्यासी, जिसे वेदांतवादी के रूप में जाना जाता है कि सभी धर्मों के साथ सद्भाव की तलाश करनी चाहिए। ऋग्वेद जो हजारों वर्ष पूर्व लिखा गया एक प्राचीन हिन्दू पाठ कहलाता है। "सत्य एक है, संत इसे विभिन्न नामों से बुलाते हैं"। हालाँकि वेदांत के विभिन्न स्वरूप मौजूद हैं, वेदांत कई मूल मान्यताओं को सिखाता है, जिनका अभ्यासकर्त्ता पालन करते हैं।

इस प्रकार वेदान्तदर्शन का व्यावहारिक पक्ष काफी महत्वपूर्ण है, जिसकी विस्तृत जानकारी हमारे लिये अत्यन्त उपयोगी है। इस शोध कार्य में इसे व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जाएगा।

3. शोध की उपयोगिता–

वेदांत हिंदू-दर्शन का एक प्राचीन विद्यालय है जो तीन प्राथमिक हिन्दू ग्रंथों पर आधारित है– उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता। वेदांत आत्मा की अवधारणाओं को सिखाता है, जिसे 'आत्मान'

सविता आनन्द
30.11.24

के रूप में जाना जाता है। वेदांतदर्शन का अध्ययन आज भी किया जाता है। अद्वैत वेदांतदर्शन का सबसे पुराना और सबसे प्रभावशाली स्कूल है। स्वामी विवेकानन्द एक प्रभावशाली हिन्दू आध्यात्मिक नेता थे, जिन्होंने आधुनिक युग के लिए हिंदू धर्म और वेदांत को आधुनिक बनाने में मदद की।

वेदांतदर्शन सिखाता है कि जीवन में व्यक्ति का लक्ष्य अपने दिव्य भाग्य को प्रकट करना है। वेदांत के अभ्यास कर्ताओं को 'वेदांतवादी' के रूप में जाना जाता है। वेदांत में आध्यात्मिक और रहस्यमय तत्त्व हैं जो अहितत्त्व और भ्रम की प्रकृति के बारे में सिखाते हैं। फ्रेडरिक नीत्शे, थॉमस एडिसन, निकोला टेस्ला, एल्डस हक्सले, जोसेफ, कैपबेल, राल्फ वाल्डो इर्मसन और हेनरी डेविड शोरो सहित कई पश्चिमी कलाकार और दार्शनिक वेदांत से प्रभावित हुए हैं।

वेदांतदर्शन ने आत्मबोध, सामाजिक समानता, नैतिक मूल्यों, पथों के संश्लेषण और सार्वभौमिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की अवधारणाओं को प्रभावित करके आध्यात्मिक प्रथाओं, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक परंपराओं पर एक अमिट छाप छोड़ी है। विश्वकल्याण एवं मनुष्यों के अभ्युदयों के लिए वेद, वेदांग, दर्शन, उपनिषद् इत्यादि का अध्ययन एवं अध्यापन करते हुए सुविचार विकसित करना है।

वेदांतदर्शन में ब्रह्म स्वरूप, जीवब्रह्मय, माया, विद्या, अविद्या ज्ञान, अवज्ञान, ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या इत्यादि मानव कल्याण एवं विश्वकल्याण को दर्शाता है जो इसके व्यवहारिक पक्ष को भी दर्शाता है। इस प्रकार विश्व एवं मानव कल्याण के लिए शोध एवं अनुसंधान हमारे समाज में अति आवश्यक है, ताकि वेदान्तदर्शन के व्यावहारिक पक्षों को उजागर किया जा सके।

4. शोध का शैक्षणिक महत्व–

हिंदू दर्शन के भीतर वेदांत आध्यात्मिक ज्ञान की नींव प्रदान करता है, जिसे सार्वभौमिक रूप से लागू किया जा सकता है। हिंदू धर्म का जन्म भारतीय संस्कृति से हुआ था। वेदांत को दुनिया भर के

सविता आनन्द
30.11.24

सभी धर्मों और सांस्कृतियों पर लागू किया जा सकता है। छह अलग-अलग वेदांत विद्यालयों में, चेतना के वर्गीकरण, आत्मा की प्रकृति और सर्वोच्च ईश्वर और व्यक्तिगत स्व या ब्रह्म और आत्मा के बीच संबंध के बीच अलगाव की डिग्री है।

वेदांत और वैदिक दर्शन का हिन्दू धर्म के साथ-साथ पश्चिम विचारकों और दार्शनिकों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। यह भी माना जाता है कि माया और एज्टेक की मेसों अमेरिकन स्वदेशी सभ्यताएँ भारतीय समुद्री व्यापारियों से प्रभावित थीं। वेदांत परंपराएँ सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख हिन्दू विचारधारा बन गई हैं और आज भी मनाई जाती है। इस शोध-कार्य का शिक्षा के क्षेत्र में काफी योगदान सिद्ध होगा जो आलेवाले शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ ही सभी संस्कृत प्रेमियों एवं अन्य सामाजिक व्यक्तियों को लाभ प्रदान करेगा।

5. शोध प्रविधि (Research Method)–

प्रस्तुत शोध-कार्य में वेदान्तदर्शन के व्यावहारिक चिन्तनों के वर्णन में विवेचनात्मक एवं वर्णनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जायेगा। जहाँ कहीं भी वैचारिक चिन्तनों की समीक्षा या विश्लेषण किया जायेगा, वहाँ पर समीक्षात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। इस शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यकतानुसार अन्य शोध प्रविधियों का भी उपयोग शोधार्थी द्वारा किया जायेगा। शोध कार्य में मूल ग्रंथों के साथ सहायक रूप में समीक्षा ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, शोध आलेखों एवं विद्वानों के मतों का भी उपयोग किया जाएगा।

6. पूर्व शोध का विवरण–

प्रस्तुत शोध विषय– "वेदान्तदर्शन का व्यावहारिक पक्ष" को लेकर अभी तक कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। अत: यह एक नूतन शोध-कार्य होगा। वैसे वेदान्त या उपनिषदों पर अनेक शोध कार्य हुए

सविता आनन्द
30.11.24

हैं, पर इसके व्यावहारिक पक्ष पर शोध कार्य की सख्त आवश्यकता है, ताकि मानव जीवन में इसकी और अधिक उपयोगिता सिद्ध हो सके।

7. **अध्यायीकरण–**

प्रस्तुत शोध-कार्य को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया जाएगा–

	भूमिका
प्रथम अध्याय–	वेदान्तदर्शन के व्यावहारिक पक्ष की भावना
द्वितीय अध्याय –	वैदिक वाङ्मय का व्यावहारिक पक्ष विवेचना
तृतीय अध्याय –	वेदान्त के व्यावहारिक पक्षों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक चिन्तन
चतुर्थ अध्याय –	वेदान्त में एकता, मानवता एवं व्यावहारिक भावनाएँ
पंचम अध्याय –	आधुनिक परिप्रेक्ष्य में व्यावहारिकता की आवश्यकता
	उपसंहार एवं निष्कर्ष

8. **सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची–**

- ब्रह्मसूत्र, शांकर भाष्यम्, व्या. स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, चौखमबा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2013.
- वेदान्त पारिजात सौरभ (ब्रह्मसूत्र निम्बार्कभाष्य), श्री सर्वेश्वर प्रेस, वृन्दावन, 1990.
- श्रीवेदान्तदर्शन, गोविन्दभाष्य, व्या. यामदास बलदेव, व्रजगौरव प्रकाशन, श्रीधाम वृन्दावन, 2003.

सविता आनन्द
30·11·24

- श्रीरामानन्द भाष्य, ज्योतिष प्रकाश प्रेस, वाराणसी, 1963.
- विवेकचुड़ामणि, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत्-2070.
- ईशादि नौ उपनिषद् (शाङ्करभाष्यार्थ सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत्-2072.
- वेदान्तसिद्धांत मुक्तावली, व्या. आचार्य लक्ष्मीश्वर झा, नाग प्रकाशन, दिल्ली, 1996.
- वेदान्तसार, प्रो. सन्तनारायण श्रीवास्तव, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद, 2012.
- श्रीमद्भगवद्गीता (रामानुजभाष्य), गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2060.
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय.
- संस्कृत-हिन्दी शब्दकोष, शिवराम आप्टे.
- अमरकोष, अमर सिंह आदि.

शोध-निर्देशक

रवीन्द्र नारायण चौरसिया
30/11/24

(डॉ. आर.एन. चैरसिया)
सह प्राध्यापक
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

सविता आनन्द
30.11.24

(सविता आनंद)
विभागीय क्रमांक– 07
पैट क्रमांक– 22180047
पैट– 2021–22